# पत्र

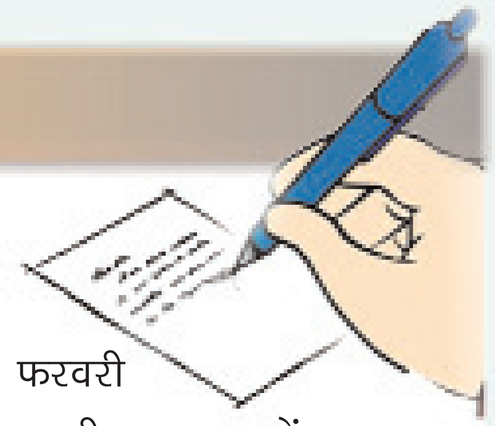



जनवरी-15 का 'अक्षर पर्व'। नंद चतुर्वेदी का बुद्धिजीवियों संबंधी लेख इस अंक की उल्लेखनीय उपलब्धि है। उन्होंने बहुत तार्किक, गंभीर और प्रामाणिक विश्लेषण किया है जिसमें बुद्धिजीवियों की भूमिका के मार्ग में आने वाली सभी पक्ष-विपक्ष विश्लेषित हुए हैं। ऐसे सर्वांग लेख कम ही देखने में आते हैं।

सर्वमित्राजी ने अपने उपसंहार में गीता को लेकर जो विचार व्यक्त किए हैं वे निभ्रन्ति हैं। भाजपाईयों का एक स्वभाव है कि वे किसी बात पर तटस्थ नहीं रह सकते। धर्म और हिन्दुत्व का भूत सिर पर हमेशा तैयार रहता है। राष्ट्रीय परिदृश्य पर भूमिका निभाने वालों से इतनी अपेक्षा तो रहती है कि वे अपने संकुचित दायरों को तोड़ें। गीता-रामायण जैसे ग्रंथों को किसी ठप्पा या प्रमाणपत्र की जरूरत नहीं है। वो हजारों साल से विश्व स्तर पर सर्वस्वीकृत महत्वपूर्ण ग्रंथ है। सभी ने उसे मान्यता दी है।

इस बार की प्रस्तावना मलय की पुस्तक की समीक्षा बनकर रह गया है। अच्छा विवेचन किया है। सहज कविताओं का चयन अच्छा लगता है।

**-डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया, 12-एमआईजी, चौबे कॉलोनी,छतरपुर (म.प्र.) 471̀7**

---

एक संपादक के रूप में समाचार से लेकर साहित्य, सिनेमा, समाज चिंतन से आपका मजबूत और रचनात्मक रिश्ता समझा जा सकता है लेकिन इसमें जो कविता के प्रति आपकी निर्गुट पक्षधरता और रागात्मकता है वह एक विशेष चीज है जो समय-समय पर अक्षरपर्व की प्रस्तावना में देखने को मिलती रही है। जनवरी अंक में वरिष्ठ कवि मलय हैं और उनका नया संकलन असंभव की आंच। उम्र के आखिरी पड़ाव पर पहुंचकर भी लिखते रहना और कविताओं में ताजगीयुक्त परिवर्तन ले आना मलय जी की विशेषता है। लेकिन इसको लक्ष्य करके विस्तृत चर्चा करना आपकी खासियत है।

कविता का एक-एक शब्द कितना अर्थवान होता है, यह स्पष्ट होता है वरिष्ठ लेखक भारत यायावर के लेख में निराला के भिक्षुक की पहचान से। निरालाजी की वह पंक्ति है- वह आता, दो टूक कलेजे के करता, पछताता पथ पर आता। मैं समझता हूं कि इस कविता के असंख्य पाठों और व्याख्याओं में पछतावा शब्द अलक्षित रह गया था। एक सामान्य शब्द के रूप में मान लिया गया था कि वह भिक्षुक होने मात्र से पछता रहा है। शायद इसी के प्रति तर्क में यायावर जी बताते हैं कि निराला का यह भिक्षुक पेशेवर भिखारी नहीं है। पेशेवर अपने कार्य पर क्यों पछताएगा। वह तो किसान है जो देशी उद्योग और कृषि विरोधी अंग्रेजी राज की साजिशों और शोषण का शिकार है और नगर में भीख मांग रहा है। यायावरजी की प्रशंसा करनी होगी कि इस सत्य की स्थापना में उन्होंने श्रम किया है, भले अपने आत्मज्ञान से पहचाना सहजतः हो। सिर्फ पछताता शब्द का खुलासा हो जाने से महाकवि निराला की यह कविता पहले से ज्यादा विराट हो गई है।

गीता को राष्ट्रीय दर्जा दिलाने के नव सरकारी अभियान पर सर्वमित्रा सुरजन द्वारा रखे गए विचार अकाट्य हैं। मेरा मानना है कि जिसका दर्जा अघोषित रूप से वैश्विक हो, उसके लिए राष्ट्रीय दर्जे की घोषणा ही क्यों? यह बुद्धिजीवियों की भूमिका का ह्रास ही है कि ऐसे अनर्गल मुद्दे उठाए जा रहे हैं और बौद्धिक बहसें इनके इर्द-गिर्द सिमट जा रही हैं। वृहत्तर जीवन छूटता जा रहा है। वरिष्ठ कवि और चिंतक नंद चतुर्वेदी अपने लेख वर्तमान भारत में बुद्धिजीवियों की भूमिका में बड़ी गहराई और विस्तार से पड़ताल करते हुए एक निराशाजनक स्थिति से अवगत कराते हैं। झूठा आशावाद आत्मप्रवंचना ही होगा जो किसी बौद्धिक सर्जक को पसंद नहीं आएगा।

**केशव शरण, एस 2।564, सिकरौल, वाराणसी 221̀2**
**मो9415295137**



---

फरवरी 2̀15 की प्रस्तावना में सुरेन्द्र तिवारी की अद्भुत पुस्तक 'विश्व के बीहड़ वन प्रान्तरों के लोमहर्षक प्रसंग' की आपने तलस्पर्शी समीक्षा लिखी है। प्रकृति के विविध रूपों की झलक के साथ उसे बचाने का लेखक का आग्रह स्पष्ट है। चंदकिशोर जायसवाल पर अरुण अभिषेक का साक्षात्कार चन्द्रकिशोर के लेखन की गहरी पर्तें खोलता है, साथ ही उनका व्यक्तित्व भी उभरकर आया है। अनेक पठनीय कहानियों के साथ अनेक मार्मिक कविताएं भी पढ़ीं। जैसे महेश प्रसाद भारती की कविताएं, जिनमें लय की रक्षा की गई है। सच्चिदानंद जोशी, सुरेन्द्र प्रबुद्ध, अंकुश्री की कविताएं, अनूप अशेष के गीत, जहीर क़ुरेशी, हितेश व्यास की ग़ज़लें पसंद आईं। चैपलिन पर तरुशिखा ने अच्छा प्रकाश डाला है। मण्टो के खत भी रोचक हैं।

**-डॉ. सुधेश**
**314, सरल अपार्टमेंट्स,**
**द्वारिका सेक्टर-1̀, दिल्ली-11̀75, मो. `935̀97412̀**